ISSN 2348-3857

लोकायतन में प्रतीक विधान

डॉ. रामेश्वर प्रसाद मीना

व्याख्याता, हिन्दी विभाग

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बांदीकुई, अलवर (राजस्थान)

शोध सारांश

सुमित्रानंदन पंत ने अपने काव्य में प्रतीकों का प्रयोग भावाभिव्यक्ति के लिए किया है उन्होने प्रतीको के माध्यम से भाव संम्प्रेषण की समस्या को हल करने का प्रयास किया है। प्रतीको का क्षेत्र बडा विस्तीर्ण है। साहित्य या कला में प्रतीक विशेष महत्व रखते है। यह सही है कि सच्ची कला प्रतीकात्मक और सांकेतिक होती है। समग्र रूप में प्रतीक व भावों की अभिव्यंजक तत्व है जो कि व्यक्ति वस्तु, गुण अथवा भाव के विशेषवाहक होते है। प्रतीकों का अर्थ-परिस्थिति, आवश्यकता व संदर्भ के अनुसार बदलता रहता है। इनमें भावों की अभिव्यक्ति की आन्तरिक शक्ति निहित होती है। प्रतीक किसी व्यक्ति , वस्तु, भाव या गुण के विशेष वाहक या सूचक होते है। प्रतीको का मुख्य कार्य सत्य की खोज या अन्वेषण करना है। प्रतीक अभिधात्मक न होकर लाक्षणिक तथा गूढ़ार्थक होते हैं। पंतजी द्वारा प्रस्तुत प्रतीको का सांगोपांग विवेचन करने पर कही भी जटिलता, दुरूहता और क्लिष्टता की अनुभूति नही होती है अपितु इनके द्वारा प्रतीक प्रयोग में अर्थ विस्तार, अभिव्यक्ति में सशक्तता, व्यंग्य में तीखी चोट एवं काव्य सौन्दर्य में कई गुनी श्रीवृद्धि परिलक्षित होती है। पंत जी ने प्रतीको का प्रयोग करने में कही भी अनावश्यक रूप से पाण्डित्य प्रदर्शन करने का प्रयास नहीं किया है, उनका स्वर्ग-स्वर्ग प्रेम महज अरविन्द दर्शन का प्रभाव मात्र माना जा सकता है।

संकेताक्षर : *अभिव्यंजक तत्व, आध्यात्मिक चेतना, यथार्थबोधक, सत्य अन्वेषक*

प्रतीकों का प्रयोग भी अभिव्यंजना की शैली के अन्तर्गत आता है।[1] प्रतीको का उद्गम स्थल मानव मन ही है प्रतीक बहुधा संकेतों का काम करते हैं। श्री पीताम्बर बडथ्वाल के शब्दो में ''मानव जीवन का सारा मंत्र प्रतीको पर आश्रित है।[2] प्रतीको की पृष्ठभूमि में अर्जेव जगत का स्पन्दन तथा जैव जगत की चेतना रहा है। डॉ. सरनाम सिंह शर्मा के अनुसार '' प्रतीकों का इतिहास मानव अनुभूति और अभिव्यक्ति का इतिहास है। अनुभूति के अभिव्यंजना पथ पर आते ही प्रतीको का प्रचलन हो गया होगा किन्तु कला के इतिहास में प्रतीक पद्धति का विकास सौन्दर्य भावना से सम्बन्धित है।[3]

प्रतीको का क्षेत्र बडा विस्तीर्ण है। साहित्य या कला में प्रतीक विशेष महत्व रखते है। यह सही है कि सच्ची कला प्रतीकात्मक और सांकेतिक होती है।[4]

प्रतीक: अर्थ, स्वरूप और विश्लेषण -लोकायतन महाकाव्य में प्रतीक विधान केा स्पष्ट करने से पूर्व प्रतीको का सामान्य परिचय आवश्यक है। काव्य में प्रतीक शब्द को जिस रूप में ग्रहण किया गया है, उसका संबन्ध अंग्रेजी के Symbol से है।[5] प्रतीक का शाब्दिक अर्थ है- अवयव, अंग, पता, चिन्ह,निशान। किसी पद्य अथवा गद्य के कुछ शब्द लिखकर या पढकर उस पूरे वाक्य का पता लगाना।[6] श्री धीरेन्द्र वर्मा के अनुसार '' अमूर्त, अदृश्य, अप्राप्त, अप्रस्तुत विषय का प्रतीक, प्रति विधान मूर्त, दृश्य, श्रव्य, प्रस्तुत विषय द्वारा करता है, वह प्रतीक है।[7] डॉ. नामवर सिंह के अनुसार '' भाव और रूप पूर्ण संगीत के बाद कभी-कभी काव्य की रूप विधि एक और काम करती है। अपनी सार्थकता प्रमाणित कर चुकने के बाद जब रूप अथवा कार्य किसी अतिरिक्त भाव की व्यंजना करता है तो वह प्रतीक है।[8] डॉ. भागीरथ मिश्र के अनुसार '' अपने रूप,गुण, कार्य या विशेषताओं के सादृश्य एवं प्रत्यक्षताओं के कारण जब कोई वस्तु या कार्य किसी अप्रस्तुत वस्तु, भाव, विचार, क्रिया-कलाप, देश, जाति संस्कृति आदि का प्रतिनिधत्व करता हुआ प्रकट किया जाता है तब प्रतीक कहलाता है।[9]

समग्र रूप में प्रतीक व भावों की अभिव्यंजक तत्व है जो कि व्यक्ति वस्तु, गुण अथवा भाव के विशेषवाहक होते है। प्रतीकों का अर्थ-परिस्थिति, आवश्यकता व संदर्भ के अनुसार बदलता रहता है। इनमें भावों की अभिव्यक्ति की आन्तरिक शक्ति निहित होती है। प्रतीक किसी व्यक्ति, वस्तु, भाव या गुण के विशेष वाहक या सूचक होते है। प्रतीको का मुख्य कार्य सत्य की खोज या अन्वेशण करना है। प्रतीक अभिधात्मक न होकर लाक्षणिक तथा गुढार्थक होते है। प्रतीको के कार्य-हिन्दी साहित्य कोश में प्रतीको के कार्यो का उल्लेख इस प्रकार हुआ है-प्रतीक किसी विषय की व्याख्या करते है, प्रतीक किसी विषय को स्वीकृति प्रदान करते है, प्रतीक पलायन का पथ भी प्रस्तुत करते है और प्रतीक सुप्त या दमित भावनाओं को जागृत करते है।[10]

पन्त जी की प्रतीक विषयक मान्यतांए -पन्त ने अपनी काव्य कृतियों की विवेचनांए प्रस्तुत करते हुए कतिपय स्थलो पर प्रतीक विषयक मान्यताओं को अभिव्यक्त किया है। पन्त जी ने उत्तरा की प्रस्तावना में लिखा है-:''उत्तरा में इधर की कुछ प्रतीकात्मक कुछ धरती तथा युग जीवन सम्बंधी, कुछ प्रकृति तथा वियोग श्रृंगार विषयक कविताएं है।[11] रजत शिखर की प्रस्तावना में उन्होने लिखा है ''रजत शिखर मनुष्य की उन्नतश्चेतन का शुभ्र प्रतीक।[12] पन्तजी ने मेरी कविता का पिछला दशक शीर्षक से निबंध में लिखा है कि ''उत्तरा के पद नवे मानवता के मानसिक आरोहण की सक्रिय चेतन आकांक्षा से झंकृत है। शुभ पुरूष नामक रूपक महात्मा गांधी को समर्पित रहा सौवर्ण-हिमालय की पृष्ठभूमि में जो मानव जाति के सांस्कृतिक संचय का प्रतीक है, नवीन युग की जीवन मान्यताओं के संघर्ष के भीतर से सौवर्ण के व्यक्तित्व में नवीन मानव की अवतारणा करने की चेष्टा की है।[13] पंतजी मानसी शीर्षक से प्रकाशित निबंध में लिखते है- मानसी मनुष्य की राग भावना अथवा राग चेतना का प्रतीक रूपक है।[14] उसमें प्रकृति की एकांत रमणीय क्रोड में एक नवयुवक जो पुरूष की आत्मा का प्रतीक है, अनुभव करता है कि यह विश्व प्रकृति एक अनन्त यौवना महिमामयी नारी के समान है, जिसकी शोभा ही उसके भीतर युवती की सुषमा में लिपटी हुई कामना का रूप धर कर नवीन उषा की तरह उदित हो रही है। उसे निर्जन में कोयल का मधुर गीत सुनाई पडता है, जैसे उसके हदय में सोई हुई कोई गोपन भावना जाग उठी हो और उसका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करना चाहती हो।[15]

इस प्रकार पन्तजी ने अपने कृतित्व पर प्रकाश डालते हुये प्रयुक्त प्रतीको के माध्यम से इस काव्य शिल्प विषयक विचारो को अभिव्यक्ति दी है। यह अभिव्यक्ति उनकी मौलिक प्रतिभा का रहस्योद्घाटन करने में सहायक बनती है।

लोकायतन में प्रतीक विधान :-पन्त जी द्वारा प्रयुक्त प्रतीको का लोकायतन के संदर्भ में विवेचन करने के लिए उनको निम्न प्रकार विभाजित कर उल्लेखित किया जा सकता है-

1. प्राकृतिक प्रतीक - इस श्रेणी में वे प्रतीक आते है जो कि प्रकृति के विभिन्न उपादानो से गृहीत है। इनमें प्रकृति के जड या चेतन पदार्थ या उनके किसी भाव- विचार से सम्बन्धित प्रतीक होते है। पन्तजी ने प्रकृति के जड व चेतन दोनो ही स्वरूपो का प्रयोग लोकायतन काव्य में किया है। पंतजी ने अंधकार, चन्द्रकला, उषा की दृष्टि चमत्कृत करना प्रतीकात्मक रूप में दर्शाया है-

'अंधकार के निविड मंच पर जैसे,चन्द्रकला रह सकती नहीं तिरस्कृत
शत उषाओं शत सुरधनु वृतो से,आवृत सी वह करती दृष्टि चमत्कृत।'

यहां अंधकार, चन्द्रकला, उषा प्राकृतिक उपादान है जो जन जीवन में अंधकार (अज्ञान) का तम हर कर आलोक (ज्ञान) से दृष्टि को चमत्कृत करती है।

'देखा सबने तम का दुर्धर पर्वत,उठता, खर झंझा बांहो से वेष्टित
उतर रही हिमवत से शरद उषा सी,स्वर्ण शुभ श्री ज्योति, वृषम शशि सी स्मित।'

तम का दुर्धर पर्वत-अज्ञान का, झंझा-तूफान के आगमन का, शरद उषा का, स्वर्ण शुभ ज्योति समान उतरना धरती पर ज्ञान का नव युग का आगमन का प्रतीक है। जो प्राकृतिक उपादानो से गृहीत है।

एक अन्य स्थान पर पंत जी लिखते है-

'नव प्रभात आतप में धुल मिल,निखर उठी थी दिशि लाली
झूम रही थी मन्द पवन में,अंवली की मरकत लड डाली।'

इसमें नवप्रभात- नवीन चेतना तथा नवयुग का प्राकृतिक प्रतीक है। पंतजी ने फूलो के झरने लटकने, बगन बोलिया की बेलो पर नारंगी रंग के गुच्छे लटकने, खेतो में अरहर खडी होने, चांदनी रात में अलसी के फूलो का सागर गाडने, मटरो पर तितलियों की परियों के फिरने आदि से प्रकृति के रंग स्थल की सुन्दर छवि की अभिव्यक्ति की है। सावन, हरियाली आम्र, मोर आदि के माध्यम से षड् ऋतुओं की प्राकृतिक छटा का वर्णन प्रतीकात्मक सौन्दर्य की सृष्टि करता है।

'फूलो के झरने लटके थे घर के आगे चढी बेल पर
नारंगी रंग के गुच्छो की बगन बोलिया लगती सुन्दर

ISSN 2348-3857

आसपास थे खेत, सुहाती खडी अंगुठे के बल अरहर
भरमाता चांदनी रात में, अलसी के फूलो का सागर
गोरी मटकों पर परियो सी सुरंग तितलियां फिरती चंचल
कृत्रिम नगरो से शोभा में ग्राम प्रकृति श्री के रंगस्थल
सावन घटा सुहाती काली, हंसती सोने की हरियाली
आम्र मोर की गाती-डाली, जड ऋतुएं बरसाती अभिमत।'

इस प्रकार पंतजी ने प्राकृतिक प्रतीकों का प्रयोग कर लोकायतन के शिल्प सौन्दर्य में वृद्धि की

2. सांस्कृतिक प्रतीक - सांस्कृतिक प्रतीको के अन्तर्गत स्थानीय संस्कृति व परिवेश, सांस्कृतिक परम्पराओं, मान्यताओं रीति रिवाजो से जुडे प्रतीको को गृहीत किया जाता है। पंतजी ने ग्रामीण परिवेश में कला व श्रेय का गठबंधन का अंकन कर ग्रामीण संस्कृति की झलक प्रस्तुत की है-

'खेत निराती, फसल काटती, जात चलाती गा गा घर घर
मधुर कला श्रम का गठबंधन रही गांव की प्रथा निरंतर।'

सांस्कृतिक प्रतीको में रावण को अहम वृति, लंकाकों कुबुद्धि, हनुमान को प्रेरणा व चेतना तथा राम को शील व शक्ति, करूणा, सहद्धयता की प्रतीक सीता को, लक्ष्मण को अनन्त पौरूष के प्रतीक दर्शाया है-

'अहम् वृति रावण लंका दुर्मति गढ, विषय वपु बन्दी
चिति इन्द्रिय वन में,
मुक्त हुई तम, मिटा अविद्या मय तम, हनुमत प्रेरित जागी
चेतना जन में।'

यज्ञ करना ग्रामीण संस्कृति में पवित्र कर्म माना गया है। सुन्दरपुर की स्त्रियाँ अपना मय तथा जीवन का तम होम करना चाहती है, मुक्ति यज्ञ में हम भी साझी होंगी। होम स्त्रियों का दुख भय। मुक्ति यज्ञ में धरणी पर उर्ध्व चरण घर ऋषि अगस्त्य -सा लवण सिन्धु, वह प्रसिद्ध दांडी यात्रा थी। जन के राम गये थे फिर वन में (गांधी जी की दांडी यात्रा राम के वन में जाने का सांस्कृतिक प्रतीक है।) हमारी संस्कृति समन्वय की है वही सांस्कृतिक चिंतन का सार है-

'सब धर्म सत्य ही के पथ,मेरा दृढ अनुभव निश्चय
आस्था, श्रद्धा, जन करूणा,सब ही का सार समन्वय।'

शान्ति ही में सार है यह गीता तथा कुरान भी करती है यदि हम इनकी बात न सुन सके तो व्यर्थ है प्रार्थना करना-

'गीता कुरान दोनों ही जो हम, न सुन सके सविनय
तो व्यर्थ प्रार्थना करना, मेरा सीधा सा आशय।'

पंत ने आध्यात्मिक व भौतिक जागृति के समन्वय की बात प्रतीकात्मक रूप से कही है।

3. भाव प्रधान प्रतीक- पंतजी ने लोकायतन में अनेकों भाव प्रधान प्रतीको का प्रयोग किया है। ये प्रतीक मूर्त गोचर आकाश में हमारे नेत्रो के सम्मुख प्रस्तुत होते है। मादक अवयवों के भाव -प्रतीक- गिरि-शिखर उरोज मनोहर, पृथु शैल माला जंघाए, श्री हरि तटी कटि सुन्दर, रजत पीत अनिल अंचल स्वर्णिम नूपुर, पावक कपोत से कवि, ऐरावत आदेश हमारा, स्वराज की फसल, क्रान्ति के बीज, शुद्ध अहिंसा की प्रतीक शुचिखादी, भारत के मस्तक पर जांत पांत का कलंक, सामाजिक जीवन ही भगवत वैभव धन एवं श्लील-अश्लील मूल्यों को हाथेा के प्रतीक रूप में चित्रित किया है-

'श्लील-अश्लील मूल्य दो हाथ, असुन्दर-सुन्दर युग स्थिति पात्र'

पंतजी ने जाति वर्ण प्रेतो से जन पीडीत को कल्पित करने वाला दिखाया है- शिखर कलश से भाते उभरे स्तन, इन्द्रिय भाव बोध को व्यक्त करता है। कमल-लता सी कुसुम कला, शाश्वत रस चेतन सी पुष्कारिणी, स्वप्नो के झुटपुट सी शशि आभा, एवं प्राणो की सर्प के समान शक्ति का भावो के सित पर चढना रूप सम्मोहन का भाव बिम्ब प्रस्तुत करता है।

'प्राणो की हो सर्प शक्ति जाग्रत, चढती भावों के सित चक्रो पर
सूक्ष्म रूप रस बोध मधुरिमा सुख।'

प्राणों की झंझा, तृष्णा को सागर, राग को लालसा के भावों का प्रतीक, पशु धर्म के समान यौन कर्म, जल विहगों सा मधुकलरव, कमल के फूल के समान अंगो का खिलना तन-मन सम्मोहन का प्रतीक भाव प्रधान बिम्बात्मक अंकन है-

'कमल फूल से खिले अंग कोमल,गाता प्राण शिराओं में शोणित
परिजात चन्दन की सी सौरभ,तन से आमन को करती मोहित।'

उपरोक्त भाव प्रतीको के अतिरिक्त मन के नभ में भावों का मधु, भावो के नभ में शशि मुख, सुरधनु किरणे उल्लास, प्रसन्नता व शाश्वत सुख का प्रतीक है। इस प्रकार पन्त जी ने भावना को प्रतीक रूपों में बहुत ही सुन्दर तरीके से पूर्ण प्रभावोत्पादकता के साथ प्रस्तुत किया है।

4. अध्यात्मक चेतना के प्रतीक-पंतजी अरविन्द दर्शन से अत्यधिक प्रभावित रहे है। लोकायतन में यत्र तत्र अरविन्द दर्शन से प्रभावित अध्यात्म चेतना के प्रतीक बिखरे पडे है। उन्होने स्वर्णिम आभा, स्वर्गिक प्रकाश, चित आनन्द, मधुभाव, उर्ध्व चेतना आदि का प्रतीकार्थी प्रयोग किया है।

स्वर्ण किरण, ज्योति किरण, प्रकाश, चेतना, स्वर्णोदय, स्वर्ण रश्मि आदि ऐसे ही प्रतीक है-

'उतर रही उषाएं भू पर जन मन,तम को कर आलोकित,

स्वर्ण रश्मि स्वातंत्रय सूर्य जगा,जन भू छोर करे दिग्प्लावित।'

पंत ने रश्मि विभव को आध्यात्मिक ज्ञान का प्रतीक अंकित किया है। इसी प्रकार बीज स्वच्छता का बो जन भू में शोभा का स्वर्ण अंकुर कर रोपण में भी स्वर्ण अंकुर आध्यात्मिक चेतना के प्रति आकार्षण का प्रतीक है।

'गुहा तिमिर से ज्योति, ज्योति से तम

नखिल विश्व जिसका लीला प्रांगण

ज्योति तमस से परे, सजन सुख रत

प्रेम तत्व अन्त: प्रेम अध पावन।'

कविवर पंत राम कृष्ण की तथा नर-नारी की शुभ्र प्रीति में ही भगवत गुण की अभिव्यंजना हो सकती है।

5. यथार्थ के बोधक नवीन प्रतीक- सुमित्रानन्दन पंत के सम्मुख पूरा गांधी युग व स्वतन्त्रता के आन्दोलन व स्वतन्त्रता प्राप्ति की पृष्ठभूमि लोकायतन के रचनाकाल के समसामयिक रही है। उन्होने यथार्थबोधक नवीन प्रतीको का प्रयोग किया जो युगानुरूप है। कवि को संस्कृति का प्रांगण नव्य चेतना का विकास होने का स्थल प्रतीत होता है। जो यथार्थपरक है-

'संस्कृति प्रांगण में मिल नर-नारी, नव जीवन में करते अवगाहन

विश्व भावना पट में कर गुम्फित,नव्य चेतना स्वर्णिम पावक कण।'

कवि ने अपनी यथार्थपरक सूक्ष्म निरीक्षण की प्रतिभा का परिचय प्रस्तुत करते हुए कहा है कि जब तक सुख साधन का उचित वितरण नही होगा तब तक धरा का कुरूप प्रांगण कुसुमित नही होगा।

पंतजी द्वारा प्रस्तुत प्रतीको का सांगोपांग विवेचन करने पर कही भी जटिलता, दुरूहता और क्लिष्टता की अनुभूति नही होती है अपितु इनके द्वारा प्रतीक प्रयोग में अर्थ विस्तार, अभिव्यक्ति में सशक्तता, वयंग्य में तीखी चोट एवं काव्य सौन्दर्य में कई गुनी श्रीवृद्धि परिलक्षित होती है। पंत जी ने प्रतीको का प्रयोग करने में कही भी अनावश्यक रूप से पाण्डित्य प्रदर्शन करने का प्रयास नही किया है, उनका स्वर्ग-स्वर्ग प्रेम महज अरविन्द दर्शन का प्रभाव मात्र माना जा सकता है। प्रकृति का चितेरा कवि होने के कारण इन्होने प्रकृति से जुडे प्रतीको का प्रयोग करने में तो अपनी विद्धता की छाप छोड दी है जो हदयस्पर्शी है।

सन्दर्भ सूची

1. शर्मा, नित्यानन्द, आधुनिक हिन्दी काव्य में प्रतीक विधान, साहित्य सदन, देहरादून, पृ. 17
2. बडथ्वाल, पीताम्बर दत्त, हिन्दी में निर्गुणधारा, पृ. 311
3. शर्मा, डॉ. सरनाम सिंह, कबीर : एक विवेचन, पृ. 200
4. शर्मा, डॉ. हरिचरण, नयी कविता का मूल्यांकन: परम्परा और प्रगति, माया प्रकाशन मंदिर, जयपुर, पृ. 250
5. शुक्ल, रामचन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, पृ. 669
6. वसु, नगेन्द्रनाथ, विश्वकोश भाग-14, पृ. 46
7. वर्मा, धीरेन्द्र, हिन्दी साहित्य कोश, ज्ञान मण्डल लिमिटेड, काशी, पृ. 47
8. सिंह, नामवर, छायावाद, सरस्वती प्रेस, बनारस पृ. 38
9. मिश्र, डॉ. भागीरथ, काव्यशास्त्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, भावनाथ रोड, वाराणसी, पृ. 72
10. वर्मा, धीरेन्द्र, हिन्दी साहित्य कोश, ज्ञान मण्डल लिमिटेड, काशी, पृ. 473
11. पंत, सुमित्रा नंदन, उत्तरा, प्रस्तावना, भाग 3, राज कमल प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 23
12. पंत, सुमित्रा नंदन, रजत शिखर, पंत, भाग 3, राज कमल प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 380
13. पंत, सुमित्रा नंदन, मेरी कविता का पिछला दशक, भाग-6, राज कमल प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 253
14. उपर्युक्त, पृ. 259
15 उपर्युक्त, पृ. 259-60